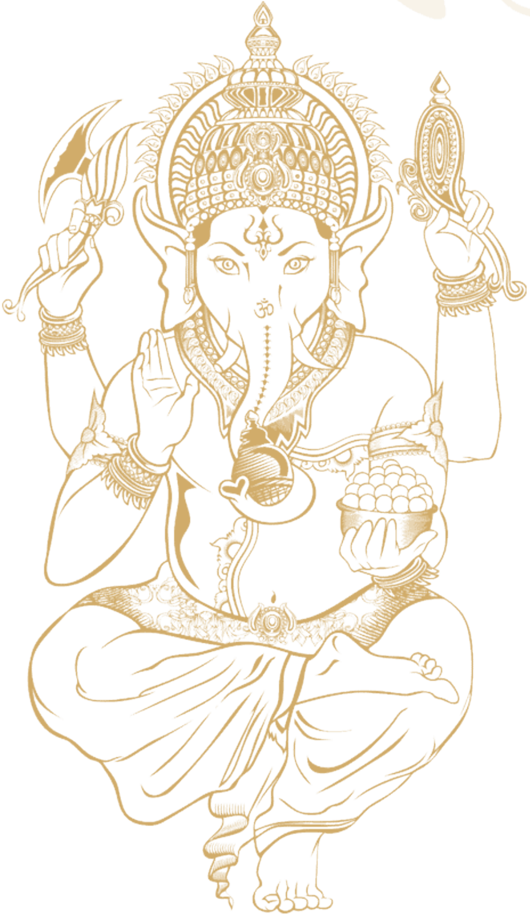

Vivan

05 Dec 2025

05:37 AM

Indore

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120579501

तिथि 05/12/2025 **समय** 05:37:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Indore **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:13
अक्षांश 22:42:00 उत्तर **रेखांश** 75:54:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:26:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	10:06:49 घं
वेलान्तर	00:09:22 घं
सूर्योदय	06:52:20 घं
सूर्यास्त	17:41:07 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	1
नक्षत्र	रोहिणी
योग	सिद्ध
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	सर्प
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वी-वीरसिंह
पाया(रा.-न.)	ताम्र-स्वर्ण
होरा	बुध
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी
चन्द्र 2वर्ष 11मा 10दि

चन्द्र	05/12/2025 14/11/2028
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	05/12/2025
बुध	14/02/2026
केतु	15/09/2026
शुक्र	15/05/2028
सूर्य	14/11/2028

योगिनी
सिद्धा 2वर्ष 0मा 22दि

सिद्धा	05/12/2025 27/12/2027
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	05/12/2025
भद्रिका	27/10/2026
उल्का	27/12/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:27:02	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	राहु	---	0:00			
सूर्य			18:52:45	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	केतु	मित्र राशि	1.14	मातृ	पितृ	साधक
चंद्र			19:24:28	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण	1.26	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	28:03:05	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	शनि	स्वराशि	1.44	अमात्य	भ्रातृ	साधक
बुध			28:38:32	तुला	विशाखा	3	गुरु	शुक्र	मित्र राशि	1.29	आत्मा	ज्ञाति	क्षेम
गुरु	व		00:02:14	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	चंद्र	उच्च राशि	1.43	कलत्र	धन	क्षेम
शुक्र			11:00:49	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	चंद्र	सम राशि	1.04	पुत्र	कलत्र	प्रत्यारि
शनि			00:58:46	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	0.82	ज्ञाति	आयु	क्षेम
राहु	व		19:30:04	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	मंगल	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		19:30:04	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

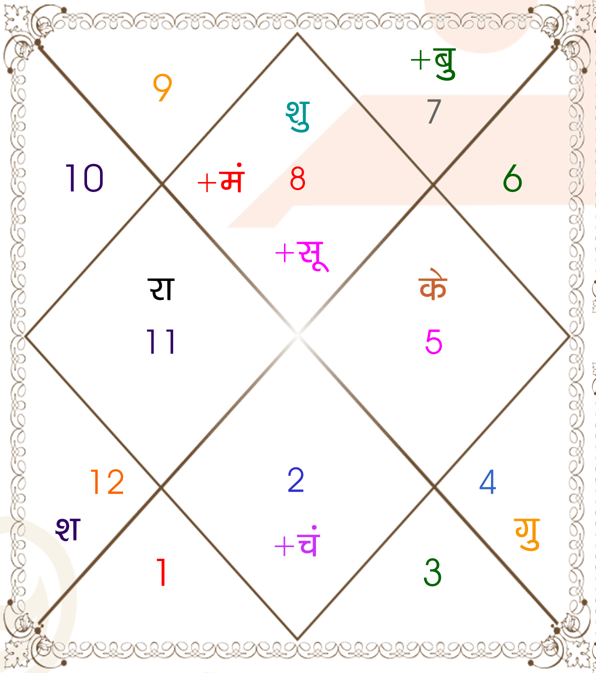

चन्द्र कुंडली

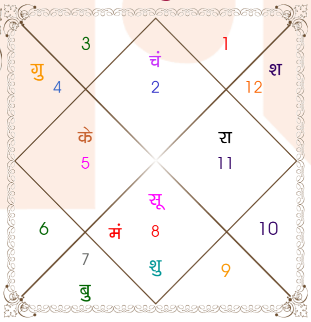

नवमांश कुंडली

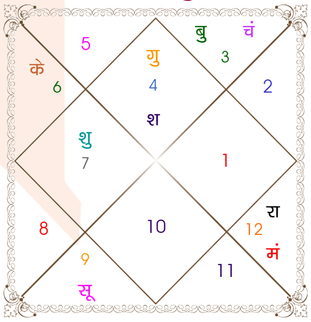

सर्वाष्टकवर्ग

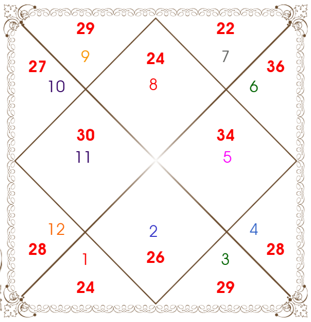

दशमांश कुंडली

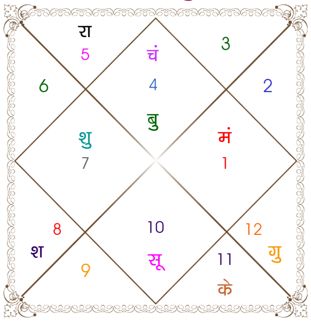

Prem Pagare
Swatik Future Point
Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh
Mo.No. 9826471293
Email:- prempagare19@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका मनुष्य गण, वैश्यवर्ण, वर्ग मूषक, नाड़ी अन्त्य तथा सर्प योनि है। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम का आधाक्षर "वि" या "वी" से प्रारम्भ होगा। यथा विनय, वीरेन्द्र आदि।

आप धर्म कर्म में तथा ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाले आस्तिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे। आप देखने में सुन्दर दर्शनीय तथा स्वभाव से सुशील होंगे। बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे। किसी भी बात का तत्काल सार्थक उत्तर देने की क्षमता आपके अन्दर विद्यमान होगी। जिससे देखने या सुनने वाले चकित रह जाएंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र होगी तथा किसी कठिन से कठिन विषय को सरलता पूर्वक समझाने की कला में आप निपुण होंगे।

धर्म कर्म कुशलः कृषीबलश्चारुशीलः विलसत्कलवेरः।
वाग्विलास कलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्यजन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न जातक धर्म कर्म करने में कुशल, कृषि कर्म से आजीविका चलाने वाला, सुन्दर स्वभाव एवं शरीर वाला, वाकपटु तथा मेधावी होता है।

धन से आप आजीवन युक्त रहेंगे। कभी भी आपको इसका अभाव प्रतीत नहीं होगा। आप उस आदमी के प्रति अत्यन्त ही कृतज्ञता प्रकट करेंगे जो आपका थोड़ा सा भी कोई कार्य सम्पन्न कर देता है। मंत्री या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति होगी। आप प्रिय वाणी बोलने वाले होंगे जो सभी लोगों को प्रिय लगेगी। सत्य का अनुपालन आप अपने जीवन में करते रहेंगे।

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
मान सागरी

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान, कृतज्ञ, बुद्धिमान, राजमान्य, प्रियवक्ता, सत्यवादी तथा देखने में सुन्दर होता है।

स्वास्थ आपका सामान्य रूप से उत्तम रहेगा। रोगग्रस्त कम ही रहेंगे। उत्साह से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा जो भी कार्य आरम्भ करेंगे। उत्साह पूर्वक उसे सम्पन्न करेंगे। आपका चरित्र तथा आचरण उत्तम एवं प्रशसंनीय होगा।

धनी कृतज्ञो मेधावी नीरोगी च प्रियंवदः।
नित्योत्साही सुशीलश्च रोहिण्यां जायते नरः।।
जातक दीपिका

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक धनी, कृतज्ञ, बुद्धिमान, प्रियवद्, नित्य उत्साही तथा सुशील होता है।

आप आत्मिक तथा शारीरिक पवित्रता दोनों का यत्नपूर्वक पालन करेंगे तथा प्रयत्न पूर्वक दोंनो की पवित्रता आजीवन बनाए रखेंगे। आपकी बुद्धि स्थिर होगी तथा जो भी कार्य करेंगे शीघ्रता से नहीं अपितु एकाग्रचित हो कर करेंगे।

रोहिण्यां सत्यं शुचिः प्रियंवदः स्थिरमतिः सुरूपश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रोहिणी में उत्पन्न मानव सत्यवादी, पवित्र, प्रिय बोलने वाला, स्थिर बुद्धि तथा सुन्दर होता है।

देखने में आपका शरीर स्वस्थ होगा। तथा अन्य जनों के दोषों को जान लेने में आप चतुर होंगे। आप एक विद्वान पुरूष भी होंगे।

रोहिण्यां पररन्ध्रवित्कृशतनुर्वोधी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दूसरे के दोष जानने वाला, दुर्बल शरीर, ज्ञानयुक्त तथा परस्त्री में रत रहता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

आपका जन्म वृष राशि में हुआ है अतः आप लालिमायुक्त गौर वर्ण के होंगे तथा आपके गाल भी स्थूल होंगे। आपके नेत्र बड़े-बड़े तथा मोटे होंगे। आलस्य का अंश भी स्वभाव से ही आपके अन्दर विद्यमान रहेगा। कुलीन लोगों के प्रति आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव निहित रहेगा। ब्राहमणों तथा गुरूजनों के भी आप परम आज्ञाकारी होंगे तथा श्रद्धा से उनका मान सम्मान करेंगे। आप अच्छी बुद्धि वाले होंगे तथा स्वभाव वात और कफ मिश्रित होगा। आपका जीवन प्रायः सुखी रहेगा तथा आप दानशील प्रवृति के व्यक्ति होंगे। आपके बाल भी घुँघराले होंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरूजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।

सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

जीवन में आप सर्व प्रकार से सुखों से युक्त रहेंगे। शुद्धता तथा सफाई के प्रति आप प्रारम्भ से ही पूर्ण रुपेण सजग रहेंगे। समस्त कार्यो को सम्पन्न करने में आप पूर्ण रुप से समर्थ रहेंगे। आप बलवान भी होंगे। धनागम पर्याप्त मात्रा में होने से आपकी प्रवृति विलासी होगी तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए आप उन्मुक्त भाव से इन वस्तुओं पर व्यय करेंगे। तेजस्विता का भाव भी आपमे विद्यमान रहेगा। आप सद्गुणों से युक्त अच्छे मित्रों के मित्र होंगे तथा आपकी मित्रता भी दीर्घकालीन होगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका मुख तथा जानु भाग दीर्घाकार होगा। आपके जीवन के प्रथम दो भाग कष्ट पूर्ण व्यतीत होंगे परन्तु अन्तिम दो भाग अत्यन्त ही सुख एवं आनन्द से व्यतीत होंगे। स्त्री वर्ग से आप विशेष आकृष्ट रहेंगे। क्षमाशीलता एवं त्याग की भावना आपके अन्तर्मन में निहित होगी। जिसका समयानुसार आप प्रदर्शन करते रहेंगे। प्रारम्भिकावस्था में आपको सामान्य रुप से कष्ट सहने पड़ेगे तथा परिश्रम भी अधिक करना पडेगा। आपके पीठ मुख तथा बगल में तिल, मस्सा या व्रणादि का निशान भी हो सकता है।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी कन्या सन्तति की संख्या पुत्र संतति से अधिक होगी। आपका व्यवहार तथा चरित्र प्रशंसनीय होगा। आप आजीवन धन का उपभोग करते हुए अपने यश को चारों तरफ फैलाएंगे।

दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल तथा घने बालों से युक्त रहेंगे तथा आप न्याय प्रिय तथा शुद्धाशुद्ध का ज्ञान करने में चतुर होंगे। आप सुन्दर गति से चलेंगे तथा शरीर तथा शरीर के अंग दीर्घ तथा सुडौल होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङघः

साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप मन्द गति से चलना पसन्द करेंगे तथा अपने समस्त कार्यो को चतुराई पूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगे। परोपकार की भावना का समावेश स्वभाव से ही आपके मन में रहेगा तथा आप इसका प्रदर्शन समयानुसार करते रहेंगे। इसी प्रकार अपने सत्कार्यो तथा पुण्य के द्वारा जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। मुखमण्डल की आकृति थोडी बड़ी होगी तथा विलास सहित गमन प्रिय होंगे। आपके अन्दर जठराग्नि की भी प्रबलता रहेगी। स्त्री वर्ग में आप लोकप्रिय रहेंगे तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अच्छे स्वभाव वाले तथा शिव एवं विष्णु भगवान की आराधना करने वाले होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरूवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वेबन्धुधूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप धार्मिक प्रवृति एवं श्रद्धालु व्यक्ति होंगे। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी असीम सेवा भावना युक्त श्रद्धा होगी। अभिमान का अंश भी आपके अन्दर व्याप्त रहेगा। आप बल से युक्त रहेंगे तथा दया तथा करूणा की भावना आपके हृदय में व्याप्त रहेगी। अतः दीन दुःखियों की आप यथा शक्ति सेवा तथा सहायता करेंगे। आप एक से अधिक कार्यो तथा कलाओं के जानने वाले होंगे। ज्ञानार्जन में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी तथा इसको प्राप्त करने में आपको सफलता प्राप्त होगी। साथ ही बहुत से लोगों को आप सुख प्रदान करेंगे।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

धन तथा मान सम्मान से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा इनका आपको आजीवन अभाव नहीं रहेगा। आप निशाने बाजी की कला में अत्यन्त दक्ष होंगे। आप गौरवर्ण के होंगे तथा नगरवासियों को वश में करने में आप सफलता प्राप्त करेंगे अर्थात् आप किसी नगर के प्रमुख व्यक्ति हो सकते हैं। आपकी आँखें भी आकृति में बडी होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आप सर्प योनि में पैदा हुए हैं। अतः आप कभी कभी अत्यन्त क्रोध के भाव का प्रदर्शन करेंगे। प्रवृति में भी चंचलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा आप अत्यन्त स्वाद लोलुप होंगे। खट्टा मीठा, तीखे स्वादों की आप हर समय इच्छा रखेंगे।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रूग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का

स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आथिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए मार्गशीर्ष, मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग, शकुनि करण, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा कन्याराशि में चन्द्रमा यह समय सदैव अशुभ फल दायक हैं। अतः आप 15 नवम्वर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण लेन-देन, कय-विकय आदि न करें। इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा में भी कोई कार्य प्रारम्भ न करें। अन्यथा अशुभ फल ही अधिक मिलेंगे। इस प्रकार शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि समय आपके अनुकूल न चल रहा हो शारीरिक या मानसिक कष्ट हो रहा हो व्यापार में हानि या नौकरी अथवा प्रोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहा हो ऐसे समय में आपको शुकवार के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत वस्त्र, श्वेत मोती, चावल, कपूर, शहद इत्यादि पदार्थो का भी ध्यान रखना चाहिए। इससे मानसिक शक्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आपको शुक्र के तांत्रीय मंत्र का किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 20 हजार जप करवाने चाहिए। ऐसा करने से अशुभ फल कम होंगे तथा लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। श्रद्धानुसार आप अपने इष्ट के रूप में भगवान शिव या विष्णु की आराधना भी कर सकते हैं।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

Prem Pagare
Swatik Future Point
Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh
Mo.No. 9826471293
Email:- prempagare19@gmail.com